अध्याय : चतुर्थ

प्रदत्तों का विश्लेषण, व्याख्या एवं परिणाम

4.1 प्रस्तावना:-

प्रस्तुत अध्याय में प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या शोध के उदेश्यों के अनुसार पृथक-पृथक प्रस्तुत किया गया है ताकि माध्यमिक विद्यालयों में अध्यनरत कक्षा 9 वीं एवं 10 वीं के विद्यार्थियों के मानसिक तनाव के बारें में जानकारी प्राप्त की जा सकें। माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 9 वीं एवं 10 वीं में अध्ययनरत छात्र तथा छात्राओँ के मानसिक-तनाव के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए 'छात्र –दबाव मापनी'का उपयोग किया गया । इस मापनी से मूल फलांको को पृथक-पृथक सारिणीबद्ध करते हुए विभिन्न समूहों के अलग-अलग मध्यमानों, प्रमाणिक विचलनों एवं टी-मूल्यों का परिकलन किया गया।

4.2 उद्देश्यानुसार प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या :-

प्रस्तुत अध्ययन में कुल चार उद्देश्य थे। उद्देश्यानुसार विश्लेषण निम्नानुसार है-

उद्देश्य 1- माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत विद्यार्थियों के घर से सम्बन्धित मानसिक तनाव में लिंग भेद के आधार पर अंतर ज्ञात करना ।

इस उद्देश्य के अध्ययन हेतु निम्न परिकल्पना तैयार की गयी ।

परिकल्पना 1- माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत विद्यार्थियों के घर से सम्बन्धित मानसिक तनाव में लिंग भेद के आधार पर सार्थक अंतर नही है।

तालिका संख्या 4.2.1

बालक एवं बालिका वर्ग के विद्यार्थियों के मध्य धर से सम्बन्धित मानसिक तनाव के मध्यमानों , प्रमाणिक विचलन एवं टी मूल्य की तालिका

क्र0सं0	संकेत	मानसिक तनाव	बालक वर्ग		बालिका वर्ग		टी मूल्य
			M	SD	M	SD	
1	A	घर	17.06	9.36	11.5	8.65	3.08

0.01 स्तर पर सार्थक

0.05 स्तर पर सार्थक

उपरोक्त तालिका संख्या 4.2.1 में गणना द्वारा प्राप्त टी मूल्य 3.08 है तथा टी मूल्य के सारणीय मान 0.05 एवं 0.01 स्तर पर क्रमश: 1.984 एवं 2.626 है। इस प्रकार गणना द्वारा प्राप्त किया गया टी मूल्य, टी के सारणीय मान से अधिक है। अत: कहा जा सकता है कि शून्य परिकल्पना जिसके अनुसार, "माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मानसिक तनाव के लिंग भेद में कोई सार्थक अन्तर नही हैं" को पूर्ण रुप सें अस्वीकृत किया जाता है

आरेख संख्या 4.2.1

बालक एवं बालिका वर्ग के विद्यार्थियों के मध्य घर सें सम्बन्धित मानसिक तनावों के मध्यमानों का आरेख

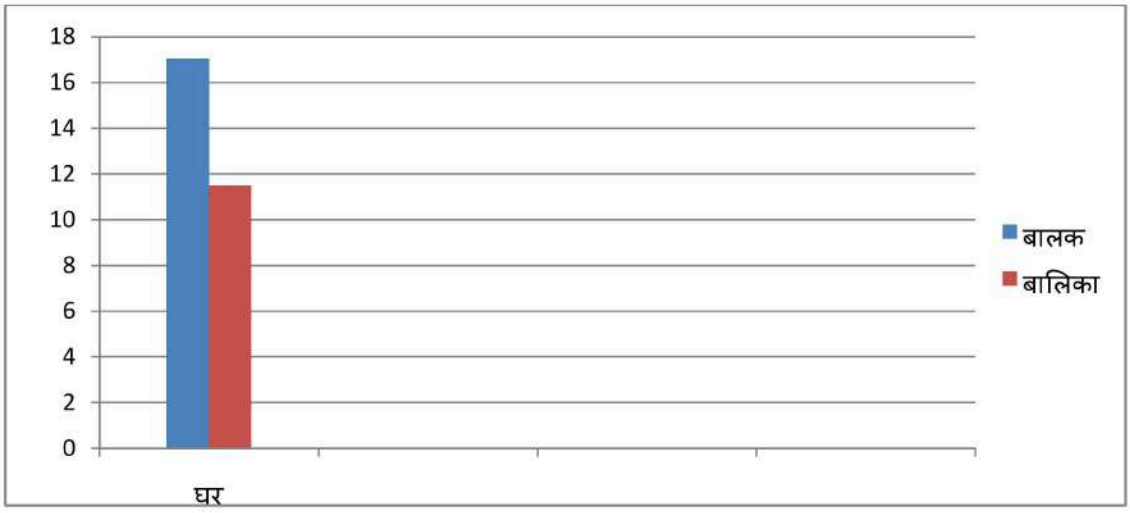

उपरोक्त आरेख संख्या 4.2.1 में बालक वर्ग का मध्यमान 17.06 तथा बालिका वर्ग का मध्यमान 11.50 है । यहाँ बालक वर्ग का मध्यमान बालिका वर्ग से अधिक पाया गया। अत: समाज सें सम्बन्धित मानसिक तनाव बालकों में बालिकाओं सें उच्च है।

उद्देश्य 2- माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत विद्यार्थियों के समाज से सम्बन्धित मानसिक तनाव में लिंग भेद के आधार पर अंतर ज्ञात करना ।

इस उद्देश्य के अध्ययन हेतु निम्न परिकल्पना तैयार की गयी ।

परिकल्पना 2- माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत विद्यार्थियों के समाज से सम्बन्धित मानसिक तनाव में लिंग भेद के आधार पर सार्थक अंतर नही है।

तालिका संख्या 4.2.2

बालक एवं बालिका वर्ग के विद्यार्थियों के मध्य समाज से सम्बन्धित मानसिक तनाव के मध्यमानों , प्रमाणिक विचलन एवं टी मूल्य की तालिका

क्र0सं0	संकेत	मानसिक तनाव	बालक वर्ग		बालिका वर्ग		टी मूल्य
			M	SD	M	SD	
1	B	समाज	15.34	9.71	10.76	5.44	2.91

0.01 स्तर पर सार्थक

0.05 स्तर पर सार्थक

उपरोक्त तालिका संख्या 4.2.2 में गणना द्वारा प्राप्त टी मूल्य 2.91 है तथा टी के सारणीय मान 0.05 एवं 0.01 स्तर पर क्रमश: 1.984 एवं 2.626 है। इस प्रकार गणना द्वारा प्राप्त किया गया टी मूल्य, टी के सारणीय मान से अधिक है। अत: कहा जा सकता है कि शून्य परिकल्पना जिसके अनुसार, "माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मानसिक तनाव के लिंग भेद में कोई सार्थक अन्तर नही हैं" को पूर्ण रुप सें अस्वीकृत किया जाता है।

आरेख संख्या 4.2.2

बालक एवं बालिका वर्ग के विद्यार्थियों के मध्य समाज सें सम्बन्धित मानसिक तनावों के मध्यमानों का आरेख

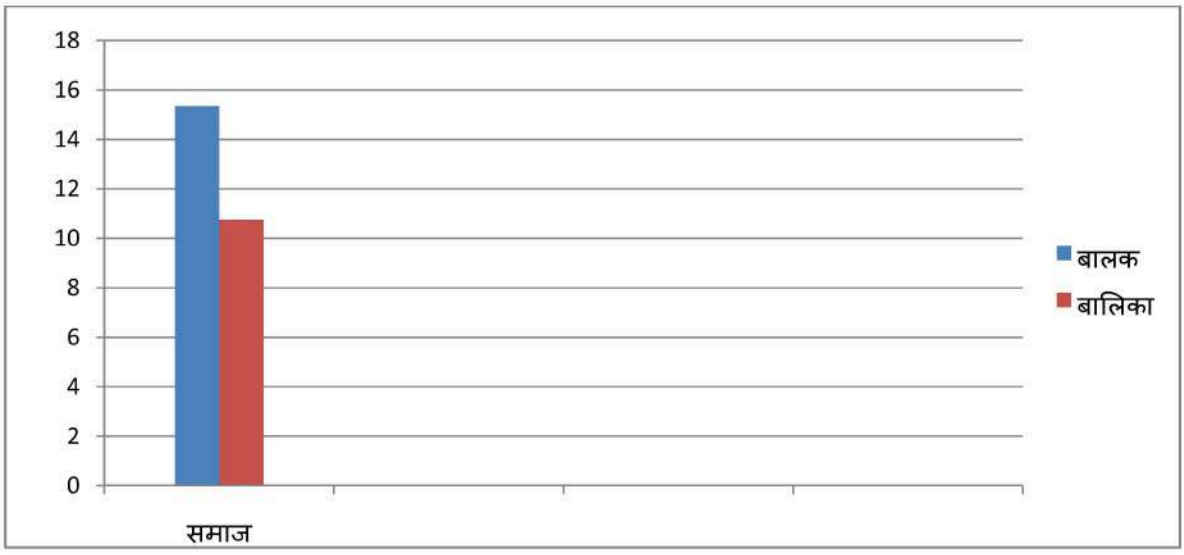

उपरोक्त आरेख संख्या 4.21 में बालक वर्ग का मध्यमान 15.34 तथा बालिका वर्ग का मध्यमान 10.76 है । यहाँ बालक वर्ग का मध्यमान बालिका वर्ग से अधिक पाया गया। अत: समाज सें सम्बन्धित मानसिक तनाव बालकों में बालिकाओं सें उच्च है।

उद्देश्य 3- माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत विद्यार्थियों के स्कूल से सम्बन्धित मानसिक तनाव में लिंग भेद के आधार पर अंतर ज्ञात करना ।
इस उद्देश्य के अध्ययन हेतु निम्न परिकल्पना तैयार की गयी ।

परिकल्पना 3- माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत विद्यार्थियों के स्कूल से सम्बन्धित मानसिक तनाव में लिंग भेद के आधार पर सार्थक अंतर नही है।

तालिका संख्या 4.2.3

बालक एवं बालिका वर्ग के विद्यार्थियों के मध्य स्कूल से सम्बन्धित मानसिक तनाव के मध्यमानों , प्रमाणिक विचलन एवं टी मूल्य की तालिका

क्र0सं0	संकेत	मानसिक तनाव	बालक वर्ग		बालिका वर्ग		टी मूल्य
			M	SD	M	SD	
3	C	स्कूल	25.48	3.2	23.72	3.11	2.79

0.01 स्तर पर सार्थक

0.05 स्तर पर सार्थक

उपरोक्त तालिका संख्या 4.2.3 में गणना द्वारा प्राप्त टी मूल्य 2.79 है तथा टी के सारणीय मान 0.05 एवं 0.01 स्तर पर क्रमश: 1.984 एवं 2.626 है। इस प्रकार गणना द्वारा प्राप्त किया गया टी मूल्य, टी के सारणीय मान से अधिक है। अत: कहा जा सकता है कि शून्य परिकल्पना जिसके अनुसार, "माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मानसिक तनाव के लिंग भेद में कोई सार्थक अन्तर नही हैं" को पूर्ण रुप सें अस्वीकृत किया जाता है।

आरेख संख्या 4.2.3

बालक एवं बालिका वर्ग के विद्यार्थियों के मध्य स्कूल सें सम्बन्धित मानसिक तनावों के मध्यमानों का आरेख

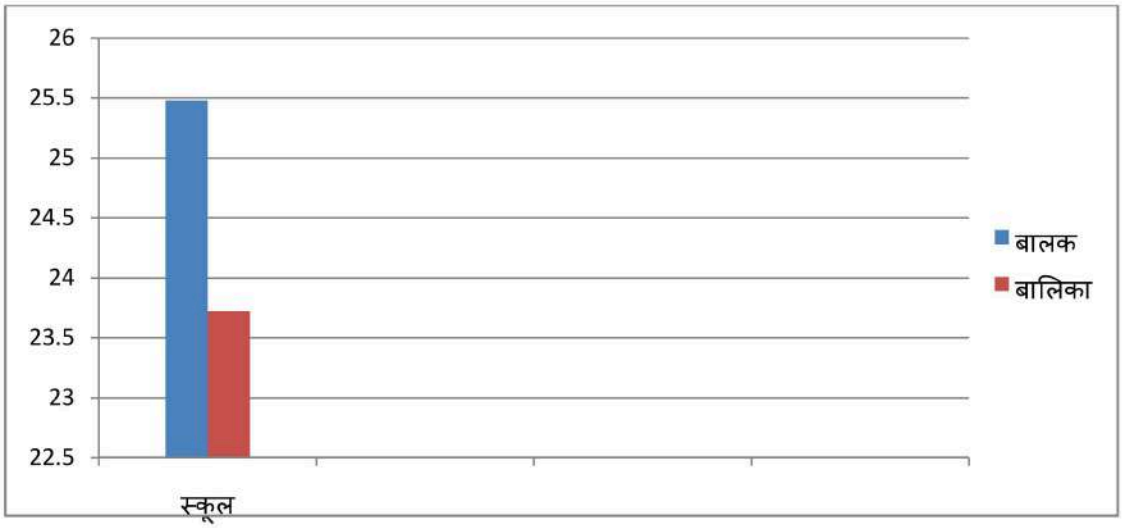

उपरोक्त आरेख संख्या 4.2.3 बालक वर्ग का मध्यमान 25.48 तथा बालिका वर्ग का मध्यमान 23.72 है । यहाँ बालक वर्ग का मध्यमान बालिका वर्ग से अधिक पाया गया। अत: स्कूल सें सम्बन्धित मानसिक तनाव बालकों में बालिकाओं सें उच्च है।

उद्देश्य 4- माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तिगत से सम्बन्धित मानसिक तनाव में लिंग भेद के आधार पर अंतर ज्ञात करना ।

इस उद्देश्य के अध्ययन हेतु निम्न परिकल्पना तैयार की गयी ।

परिकल्पना 4- माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत के विद्यार्थियों के व्यक्तिगत से सम्बन्धित मानसिक तनाव में लिंग भेद के आधार पर सार्थक अंतर नही है।

तालिका संख्या 4.2.4

बालक एवं बालिका वर्ग के विद्यार्थियों के मध्य व्यक्तिगत से सम्बन्धित मानसिक तनाव के मध्यमानों , प्रमाणिक विचलन एवं टी मूल्य की तालिका

क्र0सं0	संकेत	मानसिक तनाव	बालक वर्ग		बालिका वर्ग		टी मूल्य
			M	SD	M	SD	
1	D	व्यक्तिगत	19.02	8.9	14.68	8.65	2.47

0.01 स्तर पर सार्थक

0.05 स्तर पर सार्थक

उपरोक्त तालिका संख्या 4.2.4 में गणना द्वारा प्राप्त टी मूल्य 2.47 है तथा टी के सारणीय मान 0.05 एवं 0.01 स्तर पर क्रमश: 1.984 एवं 2.626 है। इस प्रकार गणना द्वारा प्राप्त किया गया टी

मूल्य, टी के सारणीय मान से अधिक है। अत: कहा जा सकता है कि शून्य परिकल्पना जिसके अनुसार, "माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मानसिक तनाव के लिंग भेद में कोई सार्थक अन्तर नही हैं" को पूर्ण रुप सें अस्वीकृत किया जाता है।

आरेख संख्या 4.2.4

बालक एवं बालिका वर्ग के विद्यार्थियों के मध्य व्यक्तिगत सें सम्बन्धित मानसिक तनावों के मध्यमानों का आरेख

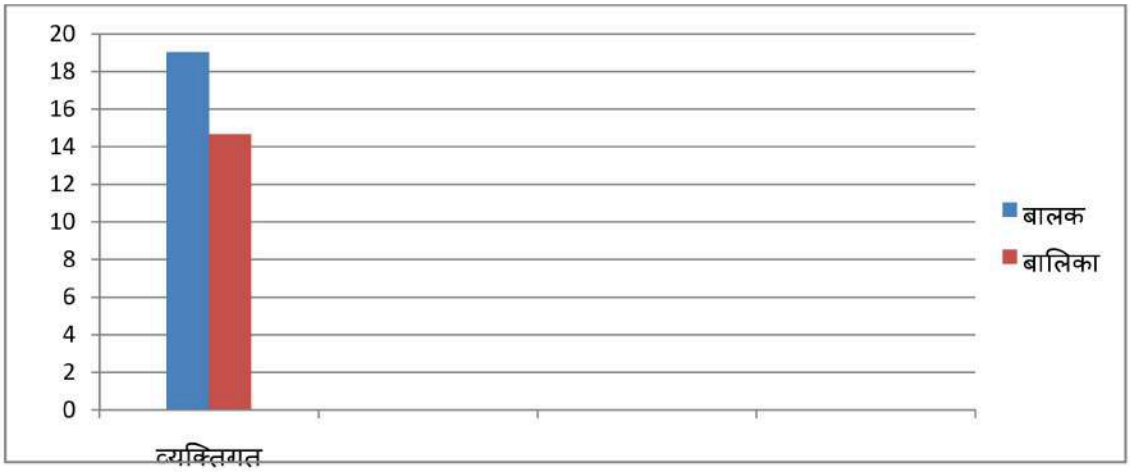

उपरोक्त आरेख संख्या 4.2.4 में बालक वर्ग का मध्यमान 19.02 तथा बालिका वर्ग का मध्यमान 14.68 है । यहाँ बालक वर्ग का मध्यमान बालिका वर्ग से अधिक पाया गया। अत: व्यक्तिगत सें सम्बन्धित मानसिक तनाव बालकों में बालिकाओं सें उच्च है।

4.3 परिणाम:-

प्रस्तुत तालिका के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि प्राप्त मध्यमान परस्पर भिन्न है। इन मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए टी-परीक्षण का प्रयोग किया । उक्त परिणाम से हमें ज्ञात होता है कि मानसिक-तनावों के चार क्षेत्रों में से (घर, समाज, स्कूल, व्यक्तिगत स्वयं) बालक और बालिकाओं के मध्य 0.01, 0.05 विश्वास स्तरों पर सार्थक अन्तर पाया गया। अत: चारों प्रकार के तनावों में बालक वर्ग बालिका वर्ग से उच्च पाये गये अर्थात् बालकों में तनाव का स्तर उच्च है, जबकि इसके विपरीत बालिका वर्ग में निम्न है।

4.4 परिणामों की विवेचना :-

अत: कहा जा सकता है कि शून्य परिकल्पना –जिसके अनुसार, "माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मानसिक तनाव के लिंग भेद में कोई सार्थक अन्तर नही हैं" को पूर्ण रुप सें अस्वीकृत किया जाता है।

प्राप्त परिणामों पर विचार करने से यह स्पष्ट होता है कि घर से सम्बन्धित तनाव, समाज से सम्बन्धित तनाव, स्कूल से सम्बन्धित तनाव तथा व्यक्तिगत (स्वयं) से सम्बन्धित तनाव में छात्र ,छात्राओं के तुलना में श्रेष्ठ पाये गये इसके समर्थन में यह तर्क दिया जा सकता है कि घऱ से सम्बन्धित तनाव के अन्तर्गत बालकों को माता-पिता द्वारा अत्यधिक दबाव डालना कि वे अपनी रुची के विषयों का चयन न कर सके बल्कि माता-पिता की इच्छा से अपने कैरियर का निर्माण करें। अक्सर मध्यवर्गीय परिवारों तथा निम्न आर्थिक आय वाले परिवारों में प्रतिदिन किसी न किसी बात को लेकर कलह होता रहता है जिससे बच्चे प्राय: बालक अधिक बुरी तरह से प्रभावित होते है तथा अभिभावक प्राय: बालकों से घरेलू कार्य अधिक करवाते हैं तथा छोटी-मोटी गलती पर अक्सर शारीरिक दण्ड देते है जिससे वे मन ही मन कुण्ठित तथा हताश हो जाते हैं। बालकों को उचित भोजन तथा खेल-खेलने की व्यवस्था का पर्याप्त अभाव होता हैं तथा गरीब परिवारों में बच्चों की बहुत अधिक सुविधा नही मिल पाती हैं।

हमारे देश में 70 प्रतिशत जनसंख्या आज भी गाँवो में निवास करती है जहाँ आर्थिक रुप से लोग खुशहाल नहीं होते और कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था होती है जिसमें मुद्रा की क्रयशक्ति कम होती है। इसलिए बालकों का पर्याप्त सर्वागीण विकास नही हो पाता है। शहरों में औधोगिकरण तथा नगरीकरण के कारण पर्याप्त भ्रष्टाचार होता है तथा महंगाई के कारण अधिकतर परिवारों में अल्प आय के कारण बालकों पर माता-पिता का ध्यान नहीं जाता है जिससे वे तनावग्रस्त हो जाता है। अत: उपरोक्त तर्क सर्वथा सत्य प्रतीत होता है कि बालकों में घर सें सम्बन्धित तनाव बालिकाओं की अपेक्षा अधिक प्रतीत होता है।

मानसिक तनाव के दूसरे क्षेत्र समाज से सम्बन्धित तनाव में उपरोक्त परिणामों के आधार पर बालकों में तनाव का स्तर उच्च है तथा बालिकाओं में तनाव का स्तर निम्न है अर्थात् बालक वर्ग का उच्च होना यह दर्शाता है कि बालक अधिक तनाव ग्रस्त होते हैं। समाज में अपना तालमेल ठीक से नही बैठा पाते चूँकि शोध कक्षा 9 वीं एवं 10 वीं के विद्यार्थियों कों आधार बनाया गया था और इस अवस्था के विद्यार्थी किशोरावस्था में प्रविष्ट कर जाते हैं। यह विस्फोटक एवं तनाव की अवस्था होती

है इसमें न बालक अधिक परिपक्व होते है और न बच्चे होते हैं। समाज की ओर अपना ध्यान खीचना चाहते हैं और समाज की उपेक्षा से शीघ्र ही तनाव से ग्रसित हो जाते हैं। सामाजिक परम्पराओं तथा रीति-रिवाजों में युवा वर्ग प्राय: कम रुचि लेते है पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव युवाओं तथा किशोरों पर अधिक पड़ रहा हैं। इसी कारण इनके व्यवहार तथा कार्य बुरी तरह से प्रभावित हो रहे हैं। अश्लील फिल्में देखना गन्दे साहित्य की ओर प्रभावित होना एवं स्वच्छन्द यौन सम्बन्धों की मान्यता देना इत्यादि के कारण भी तनावों को बढ़ावा मिल रहा है। अत: स्पष्ट है कि बालक वर्ग अपनी परिस्थितियों से सामाजिक रुप से अधिक असंतुष्ट है। अत: इसके पक्ष में यह तर्क स्वाभाविक लगता है कि अधिक तनाव में है। इसके विपरीत बालिका वर्ग में भी तनाव है पर बालकों की अपेक्षा आशिंक रुप से कम है।

स्कूल से सम्बन्धित तनाव में भी बालक वर्ग बालिकाओं की अपेक्षा अधिक पाया गया इसके पक्ष में यह तर्क प्रासंगिक होगा कि शोधकर्ता ने अपने आँकड़े को निजी मान्यता प्राप्त स्कूलों को ही आधार बनाया और स्कूलों में शिक्षकों का पर्याप्त व सही ढंग से न पढ़ाया जाना तथा नियमित रुप से कक्षाओं का न लगना, कोर्स का अधिक दबाव, अध्यापकों द्वारा कोर्स से हटकर अप्रासंगिक बातें बिना कारण करना, परीक्षा प्राणाली का कठिन होना, अध्यापकों में परस्पर आलोचना इसके अलावा स्कूल में और भी अनेक कारक बालकों में तनाव पैदा करते हैं। परीक्षा में अच्छे अंक की प्राप्ति न होना भी स्कूल से सम्बन्धित बालकों में तनाव को बढ़ा दे रहा है।

व्यक्तिगत (स्वयं) तनाव से सम्बन्धित बातों की विवेचना करने पर हमें यह ज्ञात होता है कि बालक वर्ग में तनाव का स्तर बालिकाओं की अपेक्षा उच्च है जबकि बालिका वर्ग में तनाव का स्तर स्वयं की परिस्थितियों में निम्न है अर्थात् बालिका वर्ग में तनाव को समायोजित करने की अधिक क्षमता है। तर्क के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बालक वर्ग में अधिक महत्वकांक्षा तथा किसी आदर्श को ठीक से न चुन पाना तनाव का प्रमुख कारण हो सकता है तथा बालकों में विभिन्न प्रकार के भौतिक व रासायनिक परिवर्तन के कारण भी तनाव बढ़ता जाता है, सबसे प्रमुख कारण दिवास्वप्न और नायक-पूजा बालक वर्ग को विकास और उपलब्धि को बाधित करती है अत: उपरोक्त तर्क स्वाभाविक प्रतीत होता है।